वेणु राजामणि
राष्ट्रपति के प्रेस सचिव
*Venu Rajamony*
*Press Secretary to the President*

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली - 110004
*President's Secretariat,*
*Rashtrapati Bhavan,*
*New Delhi - 110004*

# MESSAGE

The President of India, Shri Pranab Mukherjee, is happy to know that the Indian Farmers Fertiliser Cooperative Limited (IFFCO) is organising the 27th Jawaharlal Nehru Memorial IFFCO Lecture as well as presentation of IFFCO 'Sahakarita Ratna and Sahakarita Bandhu' Awards on November 20, 2014 at New Delhi.

The President extends his warm greetings and felicitations to the organisers, participants and the awardees and sends his best wishes for the success of the events.

Press Secretary to the President

R. V.

Tel. : +91-11-23016535 (Direct), 23015321 Extn 4322, Fax 23794498, E-mail-press.secy@rb.nic.in, presssecyrb@gmail.com

Phones : 23019080

INDIAN NATIONAL CONGRESS

ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI - 110 011

Sonia Gandhi
President

## Message

It gives me great pleasure to learn that the 27th Jawaharlal Nehru Memorial IFFCO Lecture is being organized on 20th November. It is befitting that the distinguished writer and literary critic Dr. Namvar Singh will deliver the talk this year.

My felicitations to IFFCO for the lecture series, since 1983, which recalls the vision and ideals of our first Prime Minister. Pandit Jawaharlal Nehru was a champion of the cooperative movement. He saw in the collective ventures of small farmers and producers a potent means to their empowerment.

IFFCO has been a beacon of progress for Indian agriculture with an exemplary commitment of service and quality products to millions of farmers. The horizons of production opened up by IFFCO have in great measure enhanced the capacity of small cultivators to raise farm productivity and compete effectively in the marketplace.

I convey my best wishes for the success of the 27th Jawaharlal Nehru Memorial IFFCO Lecture. I must congratulate the eminent cooperators being honoured with the *Sahkarita Ratna* and *Sahkarita Bandhu* awards. My compliments to Dr. Awasthi and his dedicated team at IFFCO for organizing this programme.

Sonia Gandhi

New Delhi
30 October 2014

10, JANPATH, NEW DELHI - 110 011 PHONES : 23014481, 23015584 FAX : 23018651

# 27 वाँ th

# जवाहरलाल नेहरू स्मारक इफको व्याख्यान
# Jawaharlal Nehru Memorial IFFCO Lecture

## भाषा, साहित्य और संस्कृति
## Language, Literature and Culture


वक्ता / Speaker

प्रोफेसर नामवर सिंह

विशिष्ट लेखक एवं समालोचक

Professor Namwar Singh

Distinguished Author & Critic


20 नवम्बर, 2014

20 November, 2014

# भाषा, साहित्य और संस्कृति

– प्रो० नामवर सिंह

माननीय अध्यक्ष श्री बी एस नकई जी, प्रबंध निदेशक डा0 उदय शंकर अवस्थी जी, इफको परिवार के सदस्यगण, और अतिथि जन !

जवाहरलाल नेहरु स्मारक इफको व्याख्यान के लिए मुझे आमंत्रित करके इफको ने जो सम्मान दिया है उसके लिए हार्दिक आभार। इस व्याख्यान माला के अंतर्गत सम्भवतः हिंदी में यह पहला व्याख्यान है। नेहरु जी ने अपनी तीनों पुस्तकें 'मेरी कहानी', 'भारत की खोज' और 'विश्व इतिहास की झलक' मूलतः अंग्रेजी में लिखी थी, लेकिन जनता को वे प्रायः हिंदी में ही सम्बोधित करते थे। कई वर्ष पहले अपने गांव के पास के कमालपुर नामक कस्बे की एक जनसभा में मैंने उन्हें हिंदी में ही भाषण करते सुना था ।

जवाहरलाल एक तरह से साहित्यकार भी थे। नई दिल्ली में अवस्थित साहित्य अकादमी की पहली जनरल कौंसिल ने सर्वसम्मति से उन्हें अध्यक्ष चुना था और देश की सभी भाषाओं के प्रतिनिधि साहित्यकारों की भावनाओं का सम्मान करते हुए पंडित जी ने अकादमी की अध्यक्षता स्वीकार कर ली थी ।

दरअस्ल भाषा तो अपनी पहचान है– मनुष्य की ही नहीं, प्राणिमात्र की भी, जिसमें पशु–पक्षी से लेकर समूची मानव जाति शामिल है । इस प्रसंग में हिंदी का वह दोहा याद आता है –

**''देखत में दोउ एक हैं, जब तक बोलैं नाहिं**
**जान परत हैं काक–पिक रितु वसंत के माहिं''**

# ‘Language, Literature and Culture’

- Professor Namwar Singh

Respected Shri B.S. Nakaiji, Chairman IFFCO, Dr Udai Shankar Awasthiji, Managing Director, members of IFFCO family and guests, at the outset let me express my sincere gratitude to IFFCO for inviting me to deliver Jawaharlal Nehru Memorial IFFCO Lecture. This is perhaps the first lecture in Hindi in the series. Pandit Nehru with whose name this lecture is associated had written his books *My Story, The Discovery of India and Glimpses of World History* but he often used to address people in Hindi. Many years ago I had seen him speaking in Hindi at Kamalpur near my village. Moreover, he was a literary person, he was elected unanimously as the President of Sahitya Akademi. He had accepted the position as a mark of respect for the feelings of the representatives of Indian languages.

The fact, is that language constitutes human identity, not only of humanity but of all beings including all species, human, birds and animals. In this context I am reminded of a famous Hindi doha -

*"dekhat mein dou ek hain, jab tak bolain nahin*
*Jan parat hain kak-pik ritu vasant ke mahin"*

Cuckoo and Crow are look alikes but at the onset of spring when cuckoo sings, their differences become apparent. When Cuckoo and Crow can be differentiated with their voices then what to talk of humans?

कोयल और कौवे दोनों देखने में एक ही से दिखाई पड़ते हैं लेकिन वसंत ऋतु आने पर जब कोयल कूकने लगती है तो दोनों के बीच का फर्क साफ हो जाता है। गरज़ कि जब कौवे और कोयल का फर्क उनके बोलते ही साफ हो जाता है तो फिर मानव प्राणी की बात ही क्या ?

क्या विडम्बना है कि राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार कर लेने के बाद भी सिविल सर्विस की परीक्षा में हिंदी को एक विकल्प के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रत्याशियों को महीनों तक लम्बा संघर्ष करना पड़ा और फिर भी कामयाबी नहीं मिली। जहां तक मुझे याद है, तीन दशक पहले आयोग ने बिना किसी आंदोलन के ही इस परीक्षा में हिंदी का प्रावधान कर दिया था ।

यह एक विडम्बना नहीं तो और क्या है कि इस देश पर एक लम्बे अरसे तक राज करने वाली अंग्रेज जाति इस बात को समझती थी जबकि स्वयं अपनी सरकार इसे समझने से इनकार कर रही है। सभी नहीं तो आप लोगों में से कुछ लोगों ने जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का नाम सुना होगा। ग्रियर्सन कई वर्षों तक बिहार में कमिश्नर रहे। तब की भारत सरकार ने उन्हें भारत की भाषाओं के सर्वेक्षण का उत्तरदायित्व सौंपा और उन्होंने गाँवों के पटवारियों से लेकर ऊंचे अफसरों तक को आदेश दिया कि वे अपने–अपने इलाके में बोली जाने वाली बोलियों और भाषाओं के नमूने एकत्र करके उनके कार्यालय में भेजें। इस तरह वर्षों फील्डवर्क के जरिये एकत्रित सामग्री का विधिवत सम्पादन करके ग्रियर्सन ने लिंग्विस्टिक सर्वे आफ़ इंडिया (भारतीय भाषा सर्वेक्षण) नामक विशाल ग्रन्थमाला तैयार की। यह ग्रंथराशि भारत सरकार के शास्त्री भवन के पुस्तकालय की एक अलमारी में सुरक्षित है।

What an irony it is that despite Hindi being recognised as the Rajbhasha, students had to struggle for months, though in-vain, on the issue of allowing Hindi as an alternative language in the civil services exams. So far as I remember UPSC had made a provision for Hindi medium, three decades ago on its own without any agitation from any quarter.

Ironically the English race that ruled us for long understood it but our own government does not. Most of you would have heard the name of Sir George Abraham Grierson who served as Commissioner for long in Bihar. The then Government of India had entrusted him the responsibility of conducting the Survey of Indian languages. He had asked officials-from the village Patwaris to officials at the top—to collect samples of languages and dialects and send them to his office. With field work of many years he edited the collected materials and prepared multi-volume known as the Linguistic Survey of India. It is available in Library of Shastri Bhavan of Government of India.

Post Independence, the Government of India was requested by linguists of the country time and again to conduct linguistic survey so that the present linguistic status in the country may be ascertained. In the intervening period many reports were prepared in various Five Year Plans but no record of the state of Indian languages is available with us. For that matter a few movements pertaining to languages were launched and a few states on linguistic basis were also formed. The fact remains that the second linguistic survey is still awaited.

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से देश के भाषा वैज्ञानिकों ने एकाधिक बार अनुरोध किया कि ऐसा ही भाषा सर्वेक्षण फिर कराया जाये जिससे भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति का पता लगे। इस बीच जाने कितनी पंचवर्षीय योजनाएं बनीं और उनकी रिपोर्टें भी तैयार हुईं लेकिन भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति का कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं है ।

वैसे, भाषा के आधार पर इस बीच कुछ आन्दोलन भी हुए और परिणामस्वरूप कुछ राज्य भी बने, लेकिन यह कड़वी सच्चाई है कि भारत का दूसरा भाषा सर्वेक्षण आज तक नहीं हुआ ।

राजभाषा हिंदी के नाम पर, वैसे तो, एक केन्द्रीय समिति भी है, जिसके अध्यक्ष स्वयं प्रधानमंत्री हैं, लेकिन मुद्दत से उसकी कोई बैठक ही नहीं हुई। यह और बात है कि सरकार के कुछ विभाग साल में एक बार हिंदी–दिवस अवश्य मना लेते हैं और इस पर राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए कुछ कर्मचारियों को पुरस्कार भी प्रदान कर दिए जाते हैं। दरअस्ल यह एक प्रकार की रस्म अदायगी ही कहलाएगी।

हालत यह है कि हिंदी प्रदेश के राज्यों में वोट तो हिंदी बोलकर हासिल किया जाता है, लेकिन फाइलों पर नोट अक्सर इंग्लिश में ही होते हैं। शायद इसी हकीकत के मद्देनज़र एक बार हिंदी–प्रदेश के राज्यों में यह नारा उछाला गया कि 'जिस भाषा में वोट उस भाषा में नोट'। लेकिन अफसोस की बात है कि अब तो यह नारा भी नहीं सुनायी पड़ता। वैसे, 'हिंदी दिवस' मनाने की रस्म अब भी चालू है। फिलहाल भाषा से जुड़े प्रश्नों से इतने पर ही संतोष करना पड़ेगा। अब साहित्य....

It is known to us that there is a Central Hindi Committee in the name of Rajbhasha with the Prime Minister as its Chairperson. But the Committee has not met for long, though some departments of government celebrate Hindi Diwas every year, and few government servants are awarded for doing their official work in Hindi. This is nothing but a ritual in the name of Hindi.

The irony is that though in Hindi speaking states though votes are sought in the name of Hindi but notes on files are written in English. This reality had perhaps led to the slogan *'Jis Bhasha mein Note, Us bhasha mein Vote'*. Unfortunately, the slogan is not heard these days, the custom of celebrating Hindi Diwas continues.

Now let me move to the question of literature after briefly discussing some issues pertaining to language.

India has had a rich literary tradition. That persuades me to discuss a few aspects of Kalidasa who is an unparalleled poet not only of Sanskrit but also Indian and even world literature. In his play Abhigyan Shakuntalam, the bhramara (black bee) is hovering around the face of Shakuntala without being concerned about anything. Dushyanta sees it from a distance. Kalidas writes:

*'Vayama tattvanveshanmadhukar hatastvam khalu krati'.*

It means that while we busied ourselves considering about different aspects of the flowers, you relished it in the mean time. Here the poet indicates the difference between the terms 'tattvanveshi' and

साहित्य चर्चा का आरंभ ऐतिहासिक दृष्टि से तो आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' से ही होना चाहिए लेकिन हिंदी के संदर्भ में उसे 'तुलसीदास' के लिए सुरक्षित रखते हुए कवि कुलगुरू कालिदास से ही आरंभ करना समुचित प्रतीत होता है । विशेष रूप से 'सौदर्य' को दृष्टि में रखते हुए ।

हमारे यहां संस्कृत की अत्यंत समृद्धशाली परम्परा रही है। यहाँ मैं केवल कालिदास की चर्चा करना चाहूँगा। कालिदास, संस्कृत के ही नहीं, पूरे भारतीय साहित्य के, बल्कि यूं कहें कि विश्व साहित्य में सौन्दर्य के अप्रतिम कवि हैं। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' उनका प्रसिद्ध नाटक है। शाकुन्तलम् में भ्रमर निश्चिंत भाव से और बिना कोई विचार किये हुए शकुन्तला के मुखमंडल के चारों ओर मंडराता है और रस लेता है और छिपे हुए दुष्यंत देख रहे हैं। कालिदास लिखते हैं –

**'वयं तत्वानन्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती'**

यहां तत्वान्वेषी और मधुकर, दोनों के भेद और दोनों के भाग्य के अन्तर की ओर संकेत किया गया है। इसका राजा लक्ष्मणसिह ने बड़ा अच्छा अनुवाद किया है:

**'हम जातिहिं पाँति विचारि मरे, धनि रे धनि भौंर कहावत तू' ।**

शकुन्तला के बारे में दुष्यंत तो यह सोच रहे हैं कि न जाने यह किस जाति की कन्या है, इससे प्रेम करना कहाँ तक ठीक है, इसे अपनी पत्नी बनाना कहां तक उचित है। जाति–पाँति का यह विचार ही तत्वान्वेषण है। वह मधुकर तो कवि स्वयम् ही है और कृती भी। आलोचक के नाते हम तो अभागे हैं, हतभागे हैं।

कालिदास यौवन के सौंदर्य के कवि हैं। यद्यपि वे कम से कम शब्दों का प्रयोग करते हैं लेकिन व्यथा का वह स्वर वहां

‘madhukar’ and the fate of the two. Raja Lakshaman Singh who translated the play into Hindi translated it thus:

*‘Hum jatihin panti vicahri mare, dhani re dhani bhaunr kahavat tu’*.

Dushyanta is thinking about Shakuntala, her race, clan, and caste. Is it proper to fall in love with her or not? It is ‘tattvanveshan’ of clan and caste, *‘Vayama tattvanveshanmadhukar hatastvam khalu krati’*. The poet himself is the *‘madhukar,’* he is the creator himself. Dushyanta is like a critic who is wretched and unfortunate.

Kaildasa is a poet of beauty of youth, and uses words in a miserly manner for his purpose. However, echoes of ache and suffering may be heard even in them. It takes him closer to modern consciousness. Also this tragic sense brings him closer to contemporary life and its experiences than it might appear on the surface.

Let us turn to a few questions. The questions as to who or what created the universe? God, or nature and what is relationship among them demand serious discussion but they are not my concern. My concerns are literature and culture. Literature too is a creation. That’s why literary author who creates with words is called a creator. Here I remember a poem, to be precise a ‘nazm’ in Persian by Allama Iqbal, and is like a challenge to God:

*Tu shab afaridi, chirag afaridi*
*Sifal afaridi, ayag afariddam.*
*Bayaban-o-kuhasar-o-rag afaridi*
*Khayaban-o-gulzar-o-baugh afaridam.*
*Mun anam kehaz sang aeena sazam*

भी गूंजता रहता है । सौंदर्य के गायक होते हुए भी कालिदास कहीं न कहीं उस वेदना, व्यथा और पीड़ा को व्यक्त करते हैं जो उन्हें आधुनिक बोध के निकट ले जाती है। इस ट्रैजिक सेंस के कारण कालिदास अपेक्षाकृत आज के लोगों के अधिक निकट दिखाई पड़ते हैं और उनमें आधुनिक बोध की गूँज सुनाई पड़ती है।

यह दुनिया किसने बनाई? प्रकृति ने या कि मनुष्य ने? जवाब बहस–तलब है और फ़िलहाल वह मेरा सिरदर्द भी नहीं है। दरअस्ल, मेरी चिन्ता के केन्द्र में मुख्यतः साहित्य है – और अन्ततः संस्कृति। साहित्य भी एक तरह से सृष्टि ही है, तभी तो साहित्यकार अपने आपको स्रष्टा कहता है। उसका ख़याल है कि वह शब्दों के द्वारा इसी संसार में एक नया संसार बनाता है–निःसन्देह शब्दों के माध्यम से। प्रसंगवश मुझे मोहम्मद इकबाल की वह नज़्म याद आ रही है, जो फ़ारसी में है। यह नज़्म एक तरह से खुदा को चुनौती–सी है –

**तू शब आफ़रीदी, चिराग़ आफ़रीदम**
**सिफ़ाल आफरीदी, अयाग आफ़रीदम ।**
**बयावान–ओ कुहसार–ओ राग आफ़रीदी**
**ख़याबान–ओ–गुलज़ार–ओ बाग़ आफ़रीदम ।**
**मुन आनम केह अज़ संग आईना साज़म**
**मुन आनम केह अज़ जह्र नौशीना साज़म ।**
**तू दरया–ओ बह्र–ओ सहाब आफ़रीदी**
**सफ़ीना ओ–लहर–ए–सुराग़ आफ़रीदम ।।**

अपनी हिंदी में मोटे तौर से इसे यों कह सकते हैं कि –

**ओ खुदा! तूने रात बनाई, मैंने चिराग बनाया ।**
**तूने मिट्टी बनाई तो मैंने शीशे का प्याला बनाया**
**तूने जंगल बनाया और नंगे पहाड़ और रेगिस्तान।**
**मैंने बनाई हरी भरी घाटियां और फूलों की क्यारियाँ**
**मैं वह हूं जिसने ज़हर से अमृत बनाया ।**

*Mun anam kehaz jahn naushina sazam.*
*Yu dariya-o-bah-sahab afaridi*
*Safina o-lahar-e-surag afaridam.*

*Loosely translated it would read thus:*

*'O God! You made night and a lamp*
*You made clay and goblet of glass*
*You made jungle, naked mountains and deserts*
*I made lush green valleys and rows of flowers.*
*It is I who made elixir from poison.*
*You made river, oceans and clouds, I made ships*
*And established control over waves to reach a destination.'*

Needless to mention it here that it is a challenge to God, and untamed nature from a self-respecting poet. The poet did not spare the British government and wrote quite a few significant poems for the freedom of the country. Let me share a few lines with you:

*'Wo cheez nam hai jiska jahan mein azadi*
*Suni zaroor hai, dekhi kahin nahin maine.*
*Khuda to milata hai, insan hi nahin milata.*
*Ye cheez vah hai ki kahin dekhi nahin maine.'*

I feel tempted to share a few couplets of the poem for which Iqbal is known by all of us. It used to be on the lips of most of Indians for long:

*Sare jahan se achchha, Hindustan hamara*
*Hum bulbulen hai iski ,yeh gulistan hamara.*
*Gurbat mein hon agar hum, rahata hai dil vatan mein*
*Samajho vahin hamein bhi, dil ho jahan hamara.*
*Paravat vo sabse ooncha, hamsaya asman ka*
*Wah santari hamara, wah paswan hamara.*
*Godi mein khelati hain, iski hazaron nadiyan*
*Gulshan hai jiske dam se, raske jina hamara.*
*Mazahab nahin sikhata, apas mein bair rakhana*
*Hindi hain hum, vatan hai Hindusatan hamara.*

**तूने नदियां बनाईं और समुद्र और बादल**
**मैंने जहाज़ बनाए और अपनी मंज़िल तक पहुंचने**
**के लिए तरंगों पर काबू पाया।**

कहना न होगा कि यह एक स्वाभिमानी शायर की खुली चुनौती है, बेकाबू कुदरत को। यह आकस्मिक नहीं है कि अल्लाह को चुनौती देने वाले इस आज़ाद तबीयत शायर ने उस जमाने की अंग्रेजी सरकार को भी चुनौती दी थी और मुल्क की आज़ादी की भी शानदार कविताएं लिखीं। मुलाहिज़ा फ़रमाएं –

**वो चीज़ नाम है जिसका जहां में आज़ादी।**
**सुनी ज़रूर है, देखी कहीं नहीं मैंने।।**
**ख़ुदा तो मिलता है, इन्सान ही नहीं मिलता।**
**य' चीज़ वह है कि देखी कहीं नहीं मैंने।।**

इन कविताओं के अलावा इक़बाल जिस तराने के लिए सारे हिन्दुस्तान में जाने जाते हैं उसे पूरा–का–पूरा न सही तो उसके कुछ शेर तो नमूने के लिए पेश करने ही पड़ेंगे, क्योंकि एक ज़माने में वह हर एक हिन्दुस्तानी की ज़बान पर होता था।

**सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।**
**हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलसितां हमारा।।**
**गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।**
**समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा ।।**
**पर्वत वो सबसे ऊंचा, हमसाया आसमां का।**
**वह सन्तरी हमारा, वह पासवाँ हमारा।।**
**गोदी में खेलती हैं, इसकी हजारों नदियां।**
**गुलशन हैं जिनके दम से, रश्के जिनाँ हमारा।।**
**मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।**
**हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।।**

Iqbal who loved his country whole heartedly had earned the right to a poem like it:

*Aa, gairiyat ke parede ek bar phir utha dein*
*Bicchudon ko phir ek bar mila dein, nakshe-dui mita dein.*
*Sooni padi hui hai, muddat se dil ki basti*
*Aa ek naya shivala, is desh mein bana dein.*
*Har subah uthake gayen, mantar vo meethe meethe*
*Sare pujariyon ko, may preeti ki pila dein.*
*Shakti bhi, shanty bhi bhakto ke geet mein hai*
*Dharati ke vasiyon ki mukti pireet mein hai.*

This tradition had begun in Hindi in and around the $16^{th}$ century. Tulsidas's Ramacharitmanasa is one of the best manifestations of this spirit. Among the most touching and meaningful incidents is known as the 'Chitrakut Sabha'. According to Ramchandra Shukla, the most distinguished Hindi critic, it is a spiritual event, and it was possible only for the comprehensive and inclusive soul of Tulsidas to arrange, combine and present so many sublime psychic states of mind and forms of dharma i.e., the righteous conduct. This has been made possible by including people from different classes of society. The seriousness of righteous conduct and subscription to it by royalty and subject, teacher and pupil, brother and brother, mother and son, father and daughter, father-in-law and son-in-law, mother-in-law and daughter-in-law, kshatriya and brahmin, brahmin and shudra civilsed and otherwise have been interestingly explored in the incident. Be it citizens, people from rural areas and inhabitants, all were beholden to the incident. If one wishes to see the picture of Indian culture and courtesy, one needs to visit this scene.

अपने मुल्क को दिल से प्यार करने वाले इक़बाल को ही यह नज़्म भी लिखने का हक हासिल था –

**आ, ग़ैरियत के परदे इक बार फिर उठा दें।**
**बिछुड़ों को फिर मिला दें, नक्शे–दुई मिटा दें।।**
**सूनी पड़ी हुई है, मुद्दत से दिल की बस्ती।**
**आ इक नया शिवाला, इस देश में बना दें।।**
**हर सुबह उठके गाएं, मन्तर वह मीठे–मीठे।**
**सारे पुजारियों को, मै प्रीत की पिला दें।।**
**शक्ती भी, शान्ती भी भक्तों के गीत में है।**
**धरती के वासियों की मुक्ति पिरीत में है।**

हिंदी में इस परम्परा की शुरूआत लगभग 16वीं सदी में हो चुकी थी, जिसकी सबसे महत्वपूर्ण काव्यकृति 'रामचरित मानस' है और इसके रचनाकार हैं महाकवि तुलसीदास। 'मानस' का सबसे मार्मिक प्रसंग है 'चित्रकूट सभा'। हिंदी के सबसे बड़े समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में यह सभा एक 'आध्यात्मिक घटना' है। आचार्य शुक्ल के ही शब्दों में 'धर्म के इतने स्वरूपों की एक साथ योजना, हृदय की इतनी उदात्त वृत्तियों की एक साथ उद्भावना तुलसी के ही विशाल 'मानस' में संभव थी। यह सम्भावना उस समाज के भीतर बहुत से भिन्न–भिन्न वर्गों के समावेश द्वारा संघटित की गई है। राजा और प्रजा, गुरू और शिष्य, भाई और भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, श्वसुर और जामातृ, सास और बहू, क्षत्रिय और ब्राह्मण, ब्राह्मण और शूद्र, सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यवहारों का उपस्थित प्रसंग के धर्मगांभीर्य और भावोत्कर्ष के कारण, अत्यंत मनोहर रूप प्रस्फुटित हुआ। धर्म के उस स्वरूप को देखकर सब मोहित हो गए – क्या नागरिक, क्या ग्रामीण और क्या जंगली। भारतीय शिष्टता और सभ्यता का चित्र यदि देखना हो तो इस राज–समाज को देखिए।'

This 'sabha' [assembly] is an emotionally touching scene and an evidence of Tulsidas's poetic craft. His description of Bharata substantiates it. The poet's words bear witness to it. Bharata's language is so unique that it cannot expresses: words are easy to understand, though depthless, and meaning is limitless though the words are few:

*Sugam agam mradu manju kathore,*
*Arthu amit ati akhar thore.*
*Jyon mukhu mukur mukur nij pani,*
*Gahi na jai as adbhut bani.*

This poetic statement is equally applicable to the language of Tulsidas. This unprecedented restrain of language makes him the greatest poet of Hindi.

Tulsidas imagined the concept of 'Ramarajya' in "Uttarkand" of the Ramacharitmanas. It is his Utopia. But a great poet is one who along with stating his ideals voices expresses his views pertaining to reality of the age. Tulsidas's commitment for and consciousness of reality may be discerned in the following lines :-

*'Kisabi, kisan-kul, banik, bhikahari, bhat,*
*Chakar, chapel nat, chor, char, chetaki.*
*Pet ko padat, gun gadat, chadat giri,*
*Atat gahan-ban ahan akhetki.*
*Oonche niche karam, dharam-adharam kari,*
*Pet hi ko pachat, bechat beta betki.*
*'Tulsi' bujhai ek Rama Ghanshyam hi tain,,*
*Agi badvagi tain badi hai agi pet ki.'*

Through his Ramacharitmanas, Tulasi had presented his Utopia, and ideal to the society. However, there was no 'Ramarajya' in his own age. He

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि तुलसीदास के 'रामचरित मानस' में चित्रकूट सभा का प्रसंग सबसे मार्मिक है और उसमें भी भरत के निवेदन में तुलसीदास का कवित्व सर्वोच्च है। प्रमाण है स्वयं तुलसीदास की यह टिप्पणी –

**सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे।**
**अरथु अमित अति आखर थोरे।।**
**ज्यों मुखु मुकुर मुकुर निज पानी।**
**गहि न जाइ अस अदभुत बानी।।**

यह उक्ति स्वयं तुलसीदास की अपनी भाषा पर भी लागू होती है। कहना न होगा कि भाषा पर इसी असाधारण अधिकार के लिए तुलसीदास हिंदी के सबसे बड़े कवि माने जाते हैं।

तुलसीदास ने रामचरितमानस के उत्तरकांड में रामराज्य की परिकल्पना भी की है। यह एक महान कवि का स्वप्नलोक है। लेकिन बड़ा कवि वह है जो आदर्श के साथ–साथ अपने समय के यथार्थ को भी बयां करता है। यथार्थ के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और सजगता 'कवितावली' की इन पंक्तियों में देखते ही बनती है :–

**'किसबी, किसान–कुल, बनिक, भिखारी, भाट,**
**चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी ।**
**पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,**
**अटत गहन–बन अहन अखेटकी ।**
**उँचे–नीचे करम, धरम–अधरम करि,**
**पेट ही को पचत, बेचत बेटा–बेटकी ।**
**'तुलसी' बुझाइ एक राम घनश्याम ही तें,**
**आगि बड़वागि तें बड़ी है आगि पेट की।।'**

तुलसीदास ने रामचरित मानस के माध्यम से अपना आदर्श, अपना 'यूटोपिया' समाज के सामने प्रस्तुत किया था। किन्तु उनके समय में सब कुछ रामराज्य नहीं था। अकबर के तथाकथित स्वर्ण युग के बरक्स अपने युग की पीड़ा और दर्द से

saw anarchy in his own age, and did not hesitate to depict the truth of his age and the pain and sorrow of the age of the so-called golden age of Indian history in the reign of Akbar:

*Kheti na kisan ko, bhikahari ko na bhikh bali*
*Banik ko banij, na chakar ko chakari.*
*Jivikabihin log, sidyaman soch bas,*
*Kahein ek ekan so, kahan jaee ka kari?*
*Bedhu puran kahi, lokahu bilokiat,*
*Sankare sabai pai, Rama! Ravare kripa kari.*
*Darid-Dashnana dabai duni, Deenbandhu!*
*Durit duhin dekhi Tulsi hahaa kari.*

It was Tulsi's intellectual and literary honesty that he saw, and faced the reality of his age and expressed it. Needless to state it here that the words of Tulsi are as relevant today, as they were then.

After Tulsi, Suryakant Tripathi 'Nirala' is indispensible, not because he authored a long poem on Tulsidas but wrote an immortal poetic work like Ram ki Shakti Pooja and earned the sobriquet 'Second Tulsidas'. Let us have a divine glimpse of Ratnavali:

*Dekha, Sharada neel vasana*
*Hain sammukha swyam srashti-rasana*
*Jeevan-sameer- shuchi-nihswashna, vardatri,*
*Veena vah swayam suvadit swar*
*Phuti tar amratakshar-niejhar,*
*Yeh vishwa hansa, hain charan sughar jis par shree!*

It is so well articulated in unique poetic language that it is almost impossible for me to present it in prose. But equally, if not more, significant is a portrait of Tulsidas, like his rebirth after a transcendental experience:

भरे अपने समाज का सच सामने रखने से भी वे नहीं चूकते। कवितावली में तुलसीदास ने अपने समय की गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और आर्थिक बदहाली का हृदयद्रावक चित्रण किया है –

**खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,**
**बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।**
**जीविका बिहीन लोग, सीद्यमान सोच बस,**
**कहैं एक एकन सों, कहां जाई, का करी?**
**बेदहू पुरान कही, लोकहू बिलोकिअत,**
**सांकरे सबै पै, राम ! रावरे कृपा करी।**
**दारिद–दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु!**
**दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी।।**

दरअस्ल तुलसीदास की यह बौद्धिक और साहित्यिक ईमानदारी थी कि उन्होंने कवितावली में अपने समय के यथार्थ से टकराते हुए उसे अपनी रचना का विषय बनाया। कहना न होगा कि ये पंक्तियाँ आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि तब थीं।

तुलसीदास के बाद 'निराला' की चर्चा अपरिहार्य है, सिर्फ इसलिए नहीं कि उन्होंने तुलसीदास पर एक खंडकाव्य लिखा, बल्कि 'राम की शक्ति पूजा ' जैसी अमर काव्यकृति की रचना करके वे हिंदी में ''द्वितीय तुलसीदास'' कहलाने के अधिकारी हो गये।

पहले एक दिव्य छवि रत्नावली की –

**देखा, शारदा की नील वसना**
**हैं सम्मुख स्वयं सृष्टि–रशना**
**जीवन–समीर–शुचि–निःश्वसना, वरदात्री,**
**वीणा वह स्वयं सुवादित स्वर**
**फूटी तर अमृताक्षर–निर्झर,**
**यह विश्व हंस, हैं चरण सुघर जिस पर श्री !**

Desh kal ke shar se bindhkar
Yeh jaga kavi ashesh-chhavidhar
Iska swar bhar Bharati mukhar hoyengi,
Nishchetan nij tan mila vikal,
Chhalka shat shat kalmash ke chhal
Behati jo, ve ragini sakal soyengi.

Along with such a singular poetic achievement, he composed poems like 'Juhi ki Kali', 'Kukurmutta' and 'Garam Pakaudi'. Also he created living pictures of people from common life like 'Kulli Bhat' and 'Billesur Bakariha'. Apart from creating characters related to them Nirala in Ram ki Shakti Pooja, composed inimitable works by taking life force from lives of common people. After Tulsidas in Hindi literature it is Nirala who created literature of people with so many layers of language in it.

After discussing great poets like Kalidasa in Sanskrit, Tulsidas in Hindi, Mohammad Iqbal in Urdu, and Nirala of Hindi let me turn towards some of those precursors of Indian and world literature who gave a new direction to society and shaped their age with their works. When we think of Hindi fictional world, one remembers Munshi Premchand. Most of his famous short stories like 'Sadgati', 'Doodh ka Dam', 'Poos ki Rat', 'Thakur ka Kuwan' and 'Kafan' are set in rural background. With his writings, farmers and village became central in Hindi literature. On the basis of rich repertoire of this experience, Phanishwarnath Renu, Rahi Massom Raza, Srilal Shukla and the succeeding writers carved niche for themselves. On the basis of this literary heritage, I feel tempted to state that only that fictional work which will be written around lives of farmers in the fast eroding culture of villages and

निराला की इस सुगठित शब्द–रचना को गद्य में प्रस्तुत करना भी लोहे के चने चबाना है, जो मेरे लिए फिलहाल संभव नहीं है।

इस चित्र से भी महत्वपूर्ण है एक अतीन्द्रिय अनुभूति के बाद स्वयं तुलसीदास का पुनर्जन्म जैसा भाव–चित्र –

**देश–काल के शर से बिंधकर**
**यह जागा कवि अशेष– छविधर**
**इसका स्वर भर भारती मुखर होएंगी,**
**निश्चेतन निज तन मिला विकल,**
**छलका शत–शत कल्मष के छल**
**बहती जो, वे रागिनी सकल सोएँगी ।**

महाकवि की इस अतीन्द्रिय अनुभूति को फिलहाल सरल शब्दों में बोधगम्य बनाना कम से कम मेरे लिए तो संभव नहीं है।

वैसे, 'जुही की कली' के कवि निराला ने 'कुकुरमुत्ता' जैसी कविता भी लिखी है और 'गरम पकौड़ी' भी। कविता के अतिरिक्त निराला 'कुल्ली भाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' जैसे जन–जीवन के जीते–जागते चरित्रों के भी जनक हैं। जन–जीवन से जुड़े हुए चरित्रों पर कलम चलाते हुए 'राम की शक्ति पूजा' के सर्जक निराला ठेठ लोक बोली से शक्ति ग्रहण कर जन साहित्य की अनूठी रचना करते हैं। हिंदी में तुलसीदास के बाद निराला ही हैं जिनके साहित्य में भाषा के इतने स्तरों के नमूने मिलते हैं।

संस्कृत के कालिदास, उर्दू के मोहम्मद इक़बाल तथा हिंदी के तुलसीदास एवं निराला जैसे महान कवियों के साथ यहां भारतीय एवं विश्व कथा साहित्य के उन पुरोधाओं की चर्चा करना भी समीचीन होगा जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने समय और समाज को दिशा दी। हिंदी कथा साहित्य की बात करें तो बिना किसी संकोच के हमें सर्वप्रथम

farmers forced to commit suicide in the age of globalization will attain relevance.

Amongst so many great authors in the world of literature there is one author who is dear to me because he appears like ‘my own’ is Maxim Gorki, the Russian fiction writer. Though he is known for his novel ‘Mother’ but in the present context I am reminded of his long story which has been translated in Hindi as ‘Budhiya Izergil’. Izergil, the narrator of the story gives us a glimpse of Danko, the Super hero.

The story, based on a Russian folktale, is associated with blue sparks emanating from Steppe. To pacify the curiosity of people, Izergil tells them that they are emanating from the heart of burning heart of Danko who laid down his life for removing the lack of faith of his people in them.

As the story goes, long ago there lived a tribe of people in a place, bounded by impenetrable forest, a strong, brave and cheerful people. But other tribes came warring against them and drove them into the depth of the forest. The forest was dark and swampy and the powers of the trees were so closely interwoven that they shut out the view of the sky. Wherever they reached those waters, poisonous vapours arose and the people began to get sick and die. They had to get out of the forest. But there were only two ways: one was to get back over the road they have come but at the end of it strong and vicious foes awaited them. The other was to push forward through the forest but there they would encounter the giant trees whose mighty branches were closely entwined and whose narrow roots were sunk deep into the mire of the bogs. They were brave and would have defeated their enemies, had they not feared

प्रेमचन्द का स्मरण आता है। प्रेमचन्द की अधिकांश श्रेष्ठ कहानियां गांव की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। चाहे वह 'सद्गति' हो या 'दूध का दाम', 'पूस की रात' हो या 'ठाकुर का कुआँ' और 'कफ़न' के बारे में तो कहना ही क्या? तथ्य यह भी है कि हिंदी कथा साहित्य के केन्द्र में किसान और गांव को जगह दिलाने की पहल प्रेमचन्द ने ही की थी। आगे चलकर फणीश्वर नाथ रेणु, राही मासूम 'रज़ा', श्रीलाल शुक्ल तथा अन्य अनेक परवर्ती लेखकों ने इसी अनुभव की निधि के बल पर साहित्य में अपने लिए जगह बनाई। अपनी इस साहित्यिक विरासत के आधार पर आज यही कहने को जी चाहता है कि भूमंडलीकरण के आक्रामक दौर में नष्ट होती हुई ग्राम संस्कृति और आत्महत्या के लिए विवश किसानों को केन्द्र में रखकर किया जाने वाला कथा–सृजन ही अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है।

विश्व के एक से एक बड़े कथाकारों के बीच जो कथाकार मुझे अपना लगता है और इस नाते प्रिय भी, वह है रूसी कथाकार मक्सिम गोर्की, जो जाना जाता तो है अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'माँ' के लिए, लेकिन प्रस्तुत प्रसंग में, फ़िलहाल, उसकी लम्बी कहानी, 'बुढ़िया इज़रगिल' ही याद आ रही है और उसमें भी इज़रगिल द्वारा सुनाई हुई एक कहानी के अतिमानव नायक 'दान्को' की दास्तान की एक झलक।

कहानी स्तेपी से निकलने वाली नीली–नीली चिनगारियों से जुड़ी है। लोगों की जिज्ञासा को शांत करने के लिए बुढ़िया इज़रगिल ने यह बताया कि ये चिनगारियां 'दान्को' के जलते दिल से निकल रही हैं। 'दान्को' उस 'ट्रैजिक हीरो' की करुण कहानी है जिसने जनता की ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिए आत्म बलिदान किया। नमूने के लिए गोर्की की इस कहानी का एक अंश देख लें–

that they might be wiped out in the fight. They had their forefathers' behest to defend and if they perished their behests would perish with them.

So they sat pondering over their fate through the long night with the poisonous vapours rising around them in the mournful forest. The shadows of the fires leaped about them in the soundless dance of the evil spirits of forest and bog celebrating their triumph. Danko, young and handsome, was one of them. He said to his comrades:

"Stones can not to be removed by thinking. He who does naught will come to naught. Why should we exhaust our energies thinking and brooding? Arise! Let us go through the forest until we come out at the other end. After all it must have an end. Everything has an end. Come! Let us set forth!  They looked at him and saw that he was the best man among them for his eyes were aglow with life and strength".

"Lead us." They said and he led them.

And they followed him willingly for they believed in him. It was a difficult track. It was dark and at every step the yawning bogs swallowed people up and the trees were like a mighty wall barring the way. For a long time they went on. Then the people began to murmur against Danko, saying that he was young and inexperienced and had no right to bring them here. But he kept walking at the head with his undaunted spirit and unclouded mind.

But one day a storm broke over the forest and the trees appeared to whisper together menacingly. Instantly, it became pitch dark as if all the nights had

*''लोगों के लिए क्या करूं?' – दान्को की आवाज़ बादलों की गरज को बेधती हुई गूंज गई। और सहसा उसने अपना वक्ष चीर डाला, अपने हृदय को नोचकर बाहर निकाला और उसे अपने सिर से उँचा उठा लिया।*

*वह सूरज की भांति दमक रहा था, उसका प्रकाश सूरज से भी ज्यादा तेज़ था। जंगल की गरज शांत हो गई और मानव जाति के प्रति महान प्रेम की इस मशाल का आलोक फैल चला। प्रकाश से अंधकार के पांव उखड़ गए और वह कांपता–थरथराता हुआ दलदल के सड़े–गले गर्त में कूदकर जंगल की अतल गहराइयों में समा गया और लोग आश्चर्य के मारे बुत बने वहीं खड़े रह गये ।*

*''बढ़ चलो!–दान्को ने चिल्लाकर कहा और अपने जलते हुए हृदय को खूब ऊँचा उठाकर लोगों का पथ जगमगाता हुआ तेज़ी से आगे बढ़ चला।''*

*''जलते हुए हृदय का अद्‌भुत आलोक उन्हें अनुप्राणित कर रहा था। लोग मरते तो अब भी थे, लेकिन आंसुओं और शिकवे–शिकायत के बिना। 'दान्को' सबसे आगे बढ़ा जा रहा था और उसका हृदय दहकता ही जा रहा था।*

*सहसा जंगल ने उसके लिए रास्ता बना दिया। रास्ता बना दिया और खुद पीछे रह गया – मूक और घना। और 'दान्को' तथा वे सभी लोग सूरज की धूप और बारिश से धुली हवा के सागर में हिलोरे लेने लगे। तूफान अब उनके पीछे जंगल के ऊपर था। जबकि यहां सूरज सोना बिखेर रहा था। वर्षा के मोतियों से घास चमचमा रही थी।*

gathered there. The little people walked on under the big trees amid the roar of the storm. As they walked, the giant trees creaked and seemed to sing a sinister song. A lightning flashed above the tree tops and struck terror into the hearts of the people who were trying to escape from darkness. Since they were ashamed to admit their weakness, they poured out their anger and resentment on Danko who was walking at the head. They began to accuse him of being incapable leader. At last, the people thought of going to the enemy and making him a gift of their freedom out of their fear of the thought of death.

"You are a despicable and evil creature who has brought us to grief," they said. "You have exhausted us by leading us here. And for that you shall die."

"You said 'Lead Us' and I led you." Cried out Danko, turning to face them. "I have the courage to lead you and that is why I undertook to do so. But you? What have you done to help yourselves? You have done nothing but follow me without husbanding your strengths for a longer march. You merely followed me like a flock of sheep."

His words only infuriated them. Danko gazed upon them and he saw that they were like wild beasts. Then resentment sieved in his breast, but it was quelled by compassion. He loved these people and he feared that without him they would perish; and the flames of a great yearning to save them and lead them out onto an easy path leaped up in his heart and the mighty flames were reflected in his eyes. Seeing it the people thought that he was enraged. They thought that is why his eyes flashed so, and they instantly grew weary, like wolfs,

*सांझ का समय था और छिपते हुए सूरज की किरणों में नदी वैसी लाल लग रही थी जैसी लाल थी गर्म खून की वह धारा जो 'दान्को' की फटी छाती से बह रही थी। वीर दान्को ने अन्तहीन स्तेपी के विस्तार पर नज़र डाली, स्वाधीन धरती पर आनन्द से छलछलाती नज़र और गर्व से हंसा। फिर ज़मीन पर गिरा और मर गया। उसका वीर हृदय उसके मृत शरीर के पास पड़ा अभी तक जल रहा था।''*

कालिदास, तुलसीदास, इक़बाल, निराला, प्रेमचंद और गोर्की की साहित्य–सृष्टि की झलक दिखाने के बाद मैं अपनी ओर से कोई अतिरिक्त टिप्पणी करने के बजाय अंत में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रसिद्ध निबंध 'विश्व साहित्य' का निष्कर्ष प्रस्तुत करने की आपसे अनुमति चाहता हूं –

*''मनुष्य अनवरत अपने चारों ओर जो विकिरण सृष्टि करता है उसमें वह जैसे अपनी भाव–सृष्टि द्वारा अपने को जिस प्रकार विस्तार देता है, वही साहित्य है, संसार के चारों ओर एक दूसरा संसार। इस विश्व साहित्य में मैं आपका पथ–प्रदर्शक बनूंगा, ऐसी बात सोचिएगा भी मत। अपने–अपने साध्य के अनुसार यह रास्ता हम सबको खुद ही तय करना होगा। मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि जिस प्रकार पृथ्वी मेरा खेत और उनका खेत नहीं है, पृथ्वी को इस तरह से जानना अत्यंत ग्राम्य रूप से जानना है– उसी प्रकार साहित्य मेरी रचना, तुम्हारी रचना और उनकी रचना नहीं होता। हम लोग साधारणतः साहित्य को इस ग्राम्य ढंग से देखा करते हैं। इसी ग्राम्य संकीर्णता से अपने को मुक्ति देकर विश्व–साहित्य में विश्व–मानव को देखने का लक्ष्य हम स्थिर करेंगे, प्रत्येक लेखक की रचना में उसकी समग्रता को ग्रहण करेंगे और उसी समग्रता में सारे मनुष्यों की*

expecting him to throw himself against them and they drew closer about him that they might seize him and kill him. He saw what they were thinking, but the flames in his heart only flared up higher for their thoughts and at the sorrow to the flames of his yearning.

"What else can I do to save these people?" cried out Danko above the thunder.

And suddenly he ripped open his breast and tore out his heart and held it high above his head.

It shone like the Sun, even brighter than the Sun and the raging forest was subdued and lighted up by this torch, the torch of a grave love for the people, and the darkness retreated before it and plunged quivering into a yarning bark in the depth of the Forest. In their astonishment the people were turned into stone. The brave Danko cast his eye over the endless Steppe, joyful eye over this land of freedom, gave a proud laugh and then he fell down and died. His followers were so full of joy and hope that they did not notice that he had died and that his brave heart was still flaming beside his dead body. But one timid creature noticed it and fearing he knew not what, stomped on his flaming heart and it sent out a jar of sparks and went out. Sparks of Danko's flaming heart flashed somewhere far away like blue airy flowers blossoming only for a moment.

These are the cultural ideals that great literature proposes and celebrates. There can be no cultural ideal higher than that of laying down one's life for freeing one's own people from fear of others including death.

After seeing a few glimpses of literary works of

***अभिव्यक्ति–चेष्टा का संबंध देखेंगे, यह संकल्प स्थिर करने का समय आ गया है।''***

रवीन्द्रनाथ का यह वक्तव्य 'बंग दर्शन' के जनवरी, 1907 के अंक में पहली बार प्रकाशित हुआ था ।

कुछ ही समय के बाद रवीन्द्रनाथ का प्रसिद्ध उपन्यास 'गोरा' आया, जिसमें दुविधाग्रस्त गोरा अन्त में अपनी अस्मिता की घोषणा करते हुए कहता है –

***''नहीं, मैं हिन्दू नहीं हूं। आज मैं मुक्त हूं।... मैं दिन–रात जो होना चाह रहा था, पर हो नहीं पा रहा था, आज मैं वही हो गया हूं। आज मैं सारे भारतवर्ष का हूं। मेरे भीतर हिंदू, मुसलमान, ख्रिस्तान, किसी समाज के प्रति कोई विरोध नहीं। आज इस भारतवर्ष में सबकी जात मेरी जात है, सबका अन्न मेरा अन्न है।''***

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह आवाज़ गोरा की नहीं, बल्कि स्वयं रवीन्द्रनाथ की है। गोरा के मुंह से रवीन्द्रनाथ ही बोल रहे हैं ।

दरअस्ल रवीन्द्रनाथ मूलतः और मुख्यतः कवि ही थे। लेकिन उन्होंने कहानियां भी लिखीं और उपन्यास भी, यहां तक कि नाटक भी और उल्लेखनीय है कि उन्होंने नाटकों में स्वयं अभिनय भी किया। साहित्य के अलावा रवीन्द्रनाथ ने संगीत–रचना भी की। संगीत के क्षेत्र में रवीन्द्र – संगीत नाम से एक परंपरा प्रतिष्ठित है। संगीत के अलावा रवीन्द्रनाथ चित्र–रचना भी करते थे और उनकी चित्रकला की अलग पहचान है।

इस प्रकार अपने शांतिनिकेतन में रवीन्द्रनाथ ने 'विश्वभारती' नाम से जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें साहित्य, संगीत, कला, समाजविज्ञान के साथ–साथ

writers like Kalidas, Tulsidas, Mohammad Iqbal, Nirala and Gorky, and instead of commenting on them I would like to share the conclusive part of the famous essay entitled 'Vishwa Sahitya' of Gurudev Rabindranath Tagore in which he says that man creates a new world and thereby extends himself with his ideational creation. **"It is called literature, another world around the world. Please do even not think that I would be your guide in the world of world literature. Each one of us has to choose one's path according to one's own objectives. I want to say only this that this earth is not my or your field. To know it thus would amount to know it in extremely rustic manner. Similarly, literature is not either his, your, or mine. We often see literature in this rustic manner. Freeing ourselves from narrowness, we need to strive and see the Universal Man in world literature, and see work of every writer in his totality. Time has come to resolve and see all endeavors of expression of all human beings in totality".**

This statement of Tagore was first published in the January 1907 in Bang Darshan.

His novel Gora was published some time later. In it Gora who was ambivalent initially announces his identity: **"No I am not Hindu. Today I am free…today I am what I wanted to be day and night but could not become. Today I belong to entire India. There is no opposition in me against Hindu, Muslim, Christian or any society. Today everybody's caste or creed is mine."**

It is evident here that this is not only the voice of Gora but also of Rabindranath.

विज्ञान के वनस्पतिशास्त्र जैसे विषयों के भी नये–नये प्रयोग के लिए जगह थी। तात्पर्य यह कि साहित्यकार रवीन्द्रनाथ एक महत्वपूर्ण संस्कृति–पुरुष भी थे ।

मुझे रवीन्द्रनाथ के समय के शांतिनिकेतन को देखने का सौभाग्य तो नहीं प्राप्त हुआ, किन्तु, गुरुवर हजारीप्रसाद द्विवेदी के मुख से उस दौर की जो दास्तान सुनी है उससे 'रोमहर्षश्च जायते' की अनुभूति होती है।

सांस्कृतिक विशिष्टता की चर्चा चल ही पड़ी है तो कुछ दूसरे विश्वविद्यालयों पर भी दृष्टिपात किया जा सकता है। मेरा अपना अनुभव तो मुख्यतः दो ही विश्वविद्यालयों तक सीमित है। एक तो महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और दूसरा जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय। इन दोनों विश्वविद्यालयों की संस्कृतियों की अपनी–अपनी विशिष्टताओं के बारे में बड़े विस्तार से पोथियां लिखी गई हैं। उन सबकी चर्चा के लिए फ़िलहाल अवकाश नहीं है। कुल मिलाकर निष्कर्ष यही निकलता है कि प्रत्येक विश्वविद्यालय की अपनी विशिष्ट संस्कृति है। उदाहरण के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय भौगोलिक दृष्टि से काफी पास–पास हैं। सच तो यह है कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय मूलतः इलाहाबाद के ही निवासी थे, फिर भी उन्होंने बनारस आकर जो अपना विश्वविद्यालय बनाया, उसका चरित्र भिन्न रखा–बहुत कुछ स्वाधीनता संग्राम के विविधवर्णी रंगों के अनुरूप। जबकि इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ख्याति बहुत कुछ सिविल सर्विस की परीक्षा में कामयाबी हासिल करने के लिए थी।

यही बात दुनिया के कुछ अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के बौद्धिक और सांस्कृतिक चरित्र के बारे में भी कही जा सकती

Rabindranath was primarily a poet. But he wrote short stories, novels, and dramas. Also he acted in some of the plays, and composed music as well. His contribution to music is known as Rabindra Sangit in the world of Bangla. Moreover, he used to paint as well, and his contribution to painting has distinct place in the history of painting.

He established 'Vishwa Bharati'as a University in Shantniketan which had space for innovation in areas like literature, music, art, sociology and science and in an interdisciplinary manner. In this way writer Rabindranath was also an important cultural personality.

I had no privilege to see Shantiniketan during Rabindranath's days but my teacher Professor Hazari Prasad Dwivedi, used to tell about its glory which still delights me.

Let us look at some other educational institutions as sites of cultural transaction. My experience is limited to two universities only: Banaras Hindu University established by Mahamana Pandit Madan Mohan Malviya and Jawaharlal Nehru University. A lot has been written about their culture and characteristics. However, it may be said that every university has its own character. Banaras Hindu University and Allahabad University are geographically not so distant. In fact Mahamana Pundit Madan Mohan Malviya was from Allahabad, yet he established the BHU in Kashi, somewhat like diverse colors of the freedom struggle. On the other hand, Allahabad University became famous primarily for clearing UPSC examinations. The same may be stated about intellectual and cultural character of other

है; जैसे इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज या फिर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के हार्वर्ड, शिकागो इत्यादि विश्वविद्यालय अथवा जर्मनी का हाइडेलवर्ग विश्वविद्यालय।

गरज़ कि सम्मान्य विश्वविद्यालयों की भी अपनी–अपनी विशिष्ट संस्कृतियां होती हैं। लगभग उसी तरह जैसे प्रत्येक भाषाभाषी जाति और जनजाति की अपनी विशिष्ट संस्कृति। इसीलिए 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग प्रायः बहुवचन में किए जाने की प्रथा है और हम प्रायः 'संस्कृति' के स्थान पर 'संस्कृतियाँ' कहना  पसंद करते हैं। यह और बात है कि इस बहुलतावाद के बावजूद व्यवहार में 'भारतीय संस्कृति' का प्रयोग अधिक प्रचलित है और इसका औचित्य भी सिद्ध किया जा सकता है।

प्रसंगवश एक बहुत पुरानी बात याद आ गई।  संभवतः आज़ादी के पहले दशक की है। आचार्य नरेन्द्र देव जी तब काशी विद्यापीठ में थे। उन्होंने 'नव संस्कृति संघ' नामक एक संस्था शुरू की। शुभारम्भ की सभा का उद्‌घाटन–भाषण आचार्य जी ने स्वयं दिया। भाषण का एक वाक्य मुझे अभी तक याद है, वह वाक्य है ***'संस्कृति चित्त–भूमि की खेती है।'*** खेती शब्द का प्रयोग करते समय उनके ध्यान में निश्चय ही अंग्रेजी का 'Agriculture' शब्द रहा होगा। आचार्य जी ने 'जनवाणी' नामक एक पत्रिका भी शुरू की थी। वह भाषण संभवतः 'जनवाणी' में प्रकाशित हुआ था। 'कल्चर' के प्रसंग में क्या किसी को 'एग्रीकल्चर' की याद आती है? इसी तरह 'एग्रीकल्चर' से जुड़े लोग कभी 'कल्चर' के बारे में सोचते हैं? मुझे लगा कि इफको वालों के सामने यह बात जरूर रखनी चाहिए जिनके नाम में ही उर्वरक और सहकारिता है। सह–चिन्तन की दृष्टि से ही मैंने आप सबके सामने यह सवाल रखने की धृष्टता की है। अस्तु,

शब्दों की व्युत्पत्ति में संस्कृति का इतिहास छिपा हुआ है। संस्कृति प्रकृति का संस्कार है। प्रकृति एक प्रकार से ईश्वर

universities like Oxford University and Cambridge University in England, Harvard University and Chicago University in USA, and Heidelberg in Germany. Like universities, every race and community has its own distinct culture. That is why the word culture is often used in plural, and these days we like to use the term 'cultures', though in our country we use the term 'Indian culture' despite the plurality that we have, and a few justifications may also be forwarded in its support.

Here I am reminded of an incident that took place in the first decade after the Independence of India, perhaps. Acharya Narendra Dev was then staying in Kashi Vidyapeeth. He had established an institution named 'Nav Sanskriti Sangh' (New Cultural Forum). Obviously, Acharya-ji delivered the Inaugural Lecture. I remember one sentence of his lecture, "Sanskriti chitta-bhumi ki kheti hai." ("Culture is the yield of the land of psyche.") While using the term 'kheti', the term agriculture would have been at the back of the mind of Acharya-ji. It was published in a magazine named 'Janvani' that he had launched. Ironically the people discussing culture do not remember agriculture. Similarly, do the people associated with agriculture think of culture? I thought of submitting this question to the IFFCO family today, for the terms 'fertilizer' and 'cooperative' are interwoven in their name. Co-thinking is as essential as cooperative farming. Hence I thought of sharing it with all of you.

Thus, I may be permitted to state that the etymology of words like 'sanskriti' (culture) contains its history. Sanskriti (culture) is the cultivation of nature. Nature is god's gift to us whereas the credit for

प्रदत्त है जबकि संस्कृति का श्रेय मनुष्य को है। संस्कृति मनुष्य निर्मित है। हमारे यहां धर्म में अनेक संस्कारों की परिकल्पना की गई है। संस्कृत में कहा गया है—'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विजमुच्यते'

जन्म से सभी शूद्र होते हैं, संस्कार से लोग द्विज बनते हैं। तुलसीदास ने भी कहा है— 'जाने ब्रह्म सो विप्रवर' ।

अर्थात जो ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है। इसलिए आचार—व्यवहार में जो भी आज दिखाई पड़ता हो किन्तु भारतीय परम्परा में सिद्धान्त के स्तर पर यही मान्यताएं थीं।

कृषि भी संस्कृति का ही एक अंग है। यह संस्कृति के इतिहास का एक अध्याय है। आदिम अवस्था में गेहूं, धान, जौ आदि घास के बीजों के रूप में ही थे। मनुष्य ने उनकी 'कल्चर' करके उसे परिष्कृत रूप में अपने उपयोग—लायक बनाया। कहीं न कहीं 'कल्चर' इस बिन्दु पर भी 'एग्रीकल्चर' से जुड़ती है।

वैसे, 'संस्कृति' को अंग्रेजी में 'कल्चर' कहते हैं और यह काफी मनमोहक लगता है। लेकिन जब जर्मनी में हिटलर के नाज़ीवाद का उत्कर्ष था तो उसके प्रचार मंत्री गोयबेल्स ने कहा था कि 'कल्चर' (जर्मन कुल्टुर) शब्द सुनते ही मेरा हाथ पिस्तौल पर चला जाता है। लगता है उसे 'कोल्ट' पिस्तौल की याद आती होगी। इस समझ के तहत नाजी जर्मनी में हजारों यहूदियों को गैस चैम्बर में भस्म कर दिया गया था ।

दरअस्ल यह नाज़ीवाद घृणित नस्लवाद था। इसका संस्कृति या 'कल्चर' से कोई संबंध नहीं है। हमारी भाषा के 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग भले ही 'कल्चर' के अर्थ में किया जाए लेकिन जर्मन बल्कि नाजी 'कुल्टुर' से इसका दूर—दूर का भी कोई संबंध नहीं है। नस्ल के आधार पर हिंसा न हमारे

culture goes to man. Culture is man-made. Our tradition has conceived of many ‘sanskaras’ in the larger category of dharma. It is stated, “Janmana jayate shudrah sansakarat dwijamuchchyate”. (By birth every one is a Shudra. Through sansakaras, one becomes a dwij or Brahmin.) Tulsidas has also stated, “Jane Brhama so vipravar”. (Brahmin is one who knows Brahma.)

Agriculture is an integral part of culture. It is a chapter of the history of culture. In the primitive period wheat, paddy, and barley among others were in the form of seeds of different kinds of grass. Human beings cultivated and cultured them and made them worthy for the purpose of use. At one or other point, culture meets agriculture. The word culture is extremely interesting. But when Nazism was at its peak under Hitler, Joseph Goebbels, who was his Propaganda Minister, had remarked that whenever he heard the word ‘culture’ [‘kultur’ in German], his hand went to pistol. It seems that it must have been Colt pistol. With this understanding of ‘culture’ the Germans had exhumed thousands of Jews in the gas chambers.

In fact this Nazism was the most despicable form of racism, and had no relation with ‘sanskriti’ or ‘kultur’. Our word ‘Sanskriti’ fortunately has no relation with the German ‘kultur’. The violence on the basis of race is neither in our sanskaras nor in our ‘sanskriti’. Frankly speaking, it has no relationship with dharma. In our culture, it (this notion of culture or kultur) is viewed as sectarianism and communalism which are marked by narrow-mindedness. I have not much to add to religion but I know the catholicity of the

संस्कार में है और न हमारी संस्कृति में। सच पूछिये तो धर्म से भी इसका कोई संबंध नहीं है। अपने यहां इसे सम्प्रदायवाद और साम्प्रदायिकता के रूप में देखा जाता है, जिससे एक प्रकार की संकीर्णता की बू आती है।

'रेलिजन' शब्द के बारे में तो फिलहाल मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन अपनी भाषा के 'धर्म' का अर्थ बहुत व्यापक है। इसका प्रयोग कभी–कभी 'गुण' के अर्थ में और 'गुणधर्म' की तरह साथ–साथ भी होता है। इस दृष्टि से देखें तो अपने धर्म में निष्ठा रखने वाला आदमी भी 'सेकुलर' हो सकता है। धर्मनिरपेक्ष लेकिन अधार्मिक नहीं।

ग़रज़ कि खतरनाक न 'धर्म' शब्द है और न 'संस्कृति'। खतरनाक है वह प्रवृत्ति और खतरनाक हैं वे लोग जो 'संस्कृति' शब्द का दुरुपयोग करते हैं और अपनी 'संस्कृति' पर दाग़ लगाते हैं।

अगर आचार्य नरेन्द्र देव की बात मानकर 'संस्कृति' को 'चित्तभूमि की खेती' स्वीकार कर लें तो सवाल उठेगा– किसकी खेती –भांग की, धतूरे की या किसी अन्य नशीले पौधे की भी तो हो सकती है। न भूलें, कि हिंदी में 'संस्कृति' शब्द के साथ–साथ 'अप–संस्कृति' का भी प्रयोग होता है। गरज कि स्वयं 'संस्कृति' भी बेदाग़ नहीं। वही 'चुनरी में लागा दाग़' जैसा हाल।

मेरे पास कोई बना–बनाया निष्कर्ष नहीं है जो आपके सामने परोस दूं। मेरी दिलचस्पी दिमागी उधेड़–बुन में है, आत्म–मंथन में है। फिर वही शेर अंत में याद आता है –

**दुविधा पैदा कर दे दिलों में, ईमानों को दे टकराने ।**
**बात वो कर ऐ इश्क कि जिससे सब कायल हों, कोई न माने ।।**

.................................

term ‘dharma’ of my language which is related to true nature of the being, and also as the righteous conduct at a given point of time or in a situation. From this view point, a person entrenched in his dharma may be ‘secular’ (dharmanirpeksha) but not non-religious. The point is that neither the term ‘dharma’ nor the term ‘sanskriti’ is dangerous. Dangerous is the tendency and the people who misuse the term ‘sanskriti’ and sully their culture.

If we accept what Acharya Narendra Dev said about culture as the yield of the land of psyche, the question arises: as to which crop is grown in the field? Cannabis, marijuana, jimson weed or some other intoxicating plant? Let us not forget it here that along with the word ‘sanskriti’, there is another word ‘apsanskriti’ in use or in language. The point is that ‘sanskriti’ is spotless. It is like a stain on a piece of chunari (head-scarf).

Towards the end let me state that I do not have any manufactured conclusion. My key interest is in weaving some kind of mental perplexity. Better it is for me to sign off with an Urdu couplet:

*Duvidha paida karde dilon mein, imano ko de takarane*
*Bat wo kar ai ishq ki jisse sab kayal hon, koi na mane.*

(Create ambivalence in hearts, and let faiths clash.

Dear Love! Speak in such a way that everyone agrees but none follows.)

------------

# Professor Namwar Singh

Distingusihed Author and Noted Critic
-A Profile

Dr. Namwar Singh (born 1927) is a distinguished author and critic in Hindi. He was Born in a peasant family at Jiwanpur in Varanasi district of Uttar Pradesh. Dr. Singh was educated at the Banaras Hindu University (BHU), obtaining the degree of Ph. D. in Hindi Literature in 1953. He then taught at Banaras and Sagar Universities. He is an excellent orator and teacher that students from other streams also used to attend his lectures. He was the most popular professor among students. He later worked as a Professor and Head of Hindi Department, Jodhpur University, and Jawaharlal Nehru University, New Delhi. He was also Chancellor of the Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha in Maharashtra.

Dr. Singh wrote poetry during his student days. Soon he joined the Progressive Writers movement. He published his first book of essays, Bakalam Khud, in 1951. Later, he turned to literary criticism, and has published a number of works. His Kavita ke Naye Pratiman, is a comprehensive study of the new poetry movement in Hindi emphasizing the necessity for a new criteria to evaluate poetry. For its clarity of vision and

analytic acumen, the work has been hailed as an outstanding contribution to contemporary Hindi literature. Prof. Namwar Singh has received Sahitya Akademi award for this book.

The new criteria springing up in the Hindi poetry after the Chhayavad have been marked by Dr. Namwar Singh. He is the most important literary critic in today's Hindi World. Over the last decade or so he has acquired a pan Indian reputation as one of the tallest literary and cultural critics writing in any Indian language.

He is the recipient of many accolades. 'Shalaka Samman' was conferred on him by Hindi Akadami, Delhi in1991. Uttar Pradesh Hindi Sansthan bestowed Sahitya Bhushan Samman on him in year 1993. Recently he has been chosen for the prestigious Kuvempu Rashtriya Puraskar this year. (This award will be presented on the birth anniversary of writer Kuvempu on December 29).

Dr. Singh has authored and edited many books. His well-known works include Baklam Khud, Prithviraj Raso Ki Bhasha, Dusri Parampara ki Khoj, Vad-Vivad Samvad, Kahani Nai Kahani, Itihas aur Alochana. Presently he is Chief Editor of famous Hindi quarterly "Alochana".